हफ़्तावार रिसाला : 403
Weekly Booklet : 403

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
''आ़शिक़ाने रसूल की 130 हि़कायात'' से एक क़िस्त

Makkae Mukarrama Ki Masajid

मक्कए मुकर्रमा की मसाजिद

सफ़ह़ात : 17

मस्जिदुल ह़राम में ''नमाज़े मुस्त़फ़ा'' के 11 मक़ामात 02
ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ عنہا का मकान 11
विलादत गाहे सरवरे आ़लम صلی اللہ علیہ والہ وسلم 09
मज़ारे (ह़ज़रते) मैमूना رضی اللہ عنہا 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَالله जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**मक्कए मुकर्रमा की मसाजिद**"

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है । इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात ।

MO. 98987 32611 E-mail : Tarajimindia@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

मक्कए मुकर्रमा की मसाजिद

दुआ़ए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 16 सफ़्हात का रिसाला : "**मक्कए मुकर्रमा की मसाजिद**" पढ़ या सुन ले उसे ह़ज्जो उ़म्रह की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** पाक उस पर सौ रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शोहदा के साथ रखेगा । (معجم اوسط، 5/252، حدیث:2735)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मस्जिदुल ह़राम

मक्कतुल मुकर्रमा की मश्हूर तरीन मस्जिद, "मस्जिदुल ह़राम" है, इसी में का'बए मुशर्रफ़ा जल्वा फ़रमा है । कई अह़ादीसे मुबारका में इस बात की सराह़त की गई है कि मस्जिदुल ह़राम में एक नमाज़ दूसरी मस्जिद में एक लाख नमाज़ें अदा करने के बराबर है । क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर मस्जिदुल ह़राम का ज़िक्रे ख़ैर किया गया है मसलन 15 वें पारे की इब्तिदाई आयत में है : ﴿سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا﴾

(پ15،بنی اسرائیل:1) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए क़ा'बा) से मस्जिदे अक़्सा तक।

मस्जिदुल ह़राम में 70 अम्बियाए किराम के मज़ारात

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 7 सफ़ह़ा 303 ता 304 पर नक़्ल करते हैं : किसी नबी या वली के क़ुर्ब में (या'नी क़रीब) मस्जिद बनाना और उन की क़ब्रे करीम के पास नमाज़ पढ़ना न उन दो निय्यतों से (या'नी न नमाज़ से क़ब्र की ता'ज़ीम मक़्सूद हो न ही उस क़ब्र की त़रफ़ मुंह करने की निय्यत हो) बल्कि इस लिये कि इन की मदद मुझे पहुंचे इन के क़ुर्ब की बरकत से मेरी इ़बादत कामिल हो, इस में कुछ मुज़ाएक़ा नहीं कि वारिद हुवा है कि इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام का मज़ारे पाक "ह़त़ीम" में मीज़ाबुर्रह़मत के नीचे है और ह़त़ीम में और संगे अस्वद व ज़म ज़म के दरमियान सत्तर पैग़म्बरों (عَلَیْہِمُ السَّلَام) की क़ब्रें हैं और वहां नमाज़ पढ़ने से किसी ने मन्अ़ न फ़रमाया।

(لمعات التنقیح،3/52)

"या नबी ! चश्मे करम" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मस्जिदुल ह़राम में "नमाज़े मुस्त़फ़ा" के 11 मक़ामात

﴾1﴿ बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर ﴾2﴿ मक़ामे इब्राहीम के पीछे ﴾3﴿ मत़ाफ़ के कनारे पर ह़जरे अस्वद की सीध में ﴾4﴿ ह़त़ीम और बाबुल का'बा के दरमियान रुक्ने इ़राक़ी के क़रीब ﴾5﴿ मक़ामे ह़ुफ़रा पर जो बाबुल का'बा और ह़त़ीम के दरमियान दीवारे का'बा की जड़ में है। इस मक़ाम को "मक़ामे इमामते जिब्राईल" भी कहते हैं। शहन्शाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी मक़ाम पर जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को पांच नमाज़ों में इमामत का शरफ़ बख़्शा। इसी मुबारक

मक़ाम पर इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने "ता'मीरे का'बा" के वक़्त मिट्टी का गारा बनाया था ﴾6﴿ बाबुल का'बा की त़रफ़ रुख़ कर के (दरवाज़ए का'बा की सीध में नमाज़ अदा करना तमाम अत़राफ़ की सीध से अफ़्ज़ल है)[1] ﴾7﴿ मीज़ाबे रह़मत की त़रफ़ रुख़ कर के। (कहा जाता है कि मज़ारे ज़ियाबार में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए पुर अन्वार इसी जानिब है) ﴾8﴿ तमाम ह़त़ीम में ख़ुसूसन मीज़ाबे रह़मत के नीचे ﴾9﴿ रुक्ने अस्वद और **रुक्ने यमानी** के दरमियान ﴾10﴿ **रुक्ने शामी** के क़रीब इस त़रह़ कि "बाबे उ़मरह" आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पुश्ते अक़्दस के पीछे होता। ख़्वाह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "ह़त़ीम" के अन्दर हो कर नमाज़ अदा फ़रमाते या बाहर ﴾11﴿ ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के नमाज़ पढ़ने के मक़ाम पर जो कि रुक्ने यमानी के दाईं या बाईं त़रफ़ है और ज़ाहिर तर येह है कि मुसल्लाए आदम "मुस्तजार" पर है।

(किताबुल ह़ज, स. 274)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदे जिन्न

येह मस्जिद जन्नतुल मा'ला के क़रीब वाक़ेअ़ है। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़े फ़ज्र में क़ुरआने पाक की तिलावत सुन कर यहां जिन्नात मुसलमान हुए थे।

बूढ़ा जिन्न

ह़ज़रते सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक बूढ़े जिन्न को देखा जो एक बेश क़ीमत ख़ूबसूरत जुब्बा पहने बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ रहा है, उस के सलाम फेरने पर उन्हों ने उसे सलाम किया, सलाम का

1... येह कहा जाता है : हिन्द दरवाज़ए का'बा ही की सम्त वाक़ेअ़ हैं ।

जवाब दिया और कहा : आप इस जुब्बे पर तअ़ज्जुब कर रहे हैं ! येह जुब्बा 700 बरस से मेरे पास है, मैं ने इसी जुब्बे में ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का दीदार किया है, इसी में प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत पाई है। और मज़ीद सुनिये, मैं उन्हीं जिन्नात में से हूं जिन के बारे में सूरतुल जिन्न नाज़िल हुई है। (صفة الصفوة، 4/357۔ بلد الامین، ص 128)

जिन्नो इन्सान व मलक को है भरोसा तेरा

सरवरा ! मरजए कुल है दरे वाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मस्जिदुर्राया

येह मस्जिदे जिन्न के क़रीब ही सीधे हाथ की त़रफ़ है। "रायह" अ़रबी में झन्डे को कहते हैं। येह वोह तारीख़ी मक़ाम है जहां **फ़त्ह़े मक्का** के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना झन्डा शरीफ़ नस्ब फ़रमाया था।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मस्जिदे ख़ैफ़

येह मिना शरीफ़ में वाक़ेअ़ है। ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़ अदा फ़रमाई है। मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : صَلّٰى فِيْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ سَبْعُوْنَ نَبِيًّا या'नी मस्जिदे ख़ैफ़ में 70 अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) ने नमाज़ अदा फ़रमाई। (معجم اوسط، 4/117، حدیث: 5407) एक और रिवायत में फ़रमाया :

فِیْ مَسْجِدِ الْخَیْفِ قَبْرُسَبْعِیْنَ نَبِیًّا या'नी मस्जिदे खै़फ़ में 70 अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) की क़ब्रें हैं। (معجم کبیر، 12/316، حدیث:13525) अब इस मस्जिद शरीफ़ की काफ़ी तौसीअ़ हो चुकी है, मज़ारात की ज़ियारत नहीं हो सकती। ज़ाइरीने किराम को चाहिये कि बसद अ़क़ीदत व एह़तिराम इस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत करें, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़िदमतों में इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करें : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَنْبِيَآءَ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर ईसाले सवाब कर के दुआ़ मांगें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदे जिइर्राना

मक्कए मुकर्रमा से जानिबे त़ाइफ़ तक़रीबन 26 किलो मीटर पर वाक़ेअ़ है। आप भी यहां से उ़मरे का एह़राम बांधिये कि फ़त्हे मक्का के बा'द त़ाइफ़ शरीफ़ फ़त्ह़ कर के वापसी पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां से उ़मरे का एह़राम ज़ेबे तन फ़रमाया था। यूसुफ़ बिन माहक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मक़ामे जिइर्राना से 300 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने उ़मरे का एह़राम बांधा है, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिइर्राना पर अपना अ़सा मुबारक गाड़ा जिस से पानी का चश्मा उबला जो निहायत ठन्डा और मीठा था। (बलदुल अमीन, स. 221, अख़्बारे मक्का 5/62 ता 69) मश्हूर है उस जगह पर कुंवां है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ाइफ़ से वापसी पर यहां क़ियाम किया और यहीं माले ग़नीमत भी तक़्सीम फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 28 शव्वालुल मुकर्रम को यहां से उ़मरे का एह़राम बांधा था। (बलदुल अमीन स. 220, 221) इस जगह की निस्बत कुरैश की एक औ़रत की त़रफ़ है जिस का लक़ब जिइर्राना था। (बलदुल अमीन स. 127) अ़वाम इस मक़ाम को ''बड़ा उ़मरह'' बोलते हैं। येह निहायत ही पुरसोज़

मक़ाम है, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ "अख़्बारुल अख़्यार" में लिखते हैं कि मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने मुझे ताकीद फ़रमाई है कि मौक़अ़ मिलने पर जिइर्राना से ज़रूर उ़मरे का एह़राम बांधना कि येह ऐसा मुतबर्रक मक़ाम है कि मैं ने यहां एक रात के मुख़्तसर से ह़िस्से के अन्दर सौ से ज़ाइद बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार किया है اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ ।

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का मा'मूल था कि उ़मरे का एह़राम बांधने के लिये रोज़ा रख कर पैदल जिइर्राना जाया करते थे।

(अख़्बारुल अख़्यार, स. 278, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللهُ علٰی مُحَمَّد

मस्जिदे तन्ईम

मस्जिदुल ह़राम से तक़रीबन सात किलो मीटर पर ह़ुदूदे ह़रम से बाहर मक़ामे तन्ईम पर येह आ़लीशान मस्जिद वाक़ेअ़ है, इसे "मस्जिदे आ़इशा" भी कहते हैं। ख़ुश नसीब ज़ाइरीने किराम यहां से उ़मरे का एह़राम बांधते हैं, अ़वाम इस मक़ाम को "छोटा उ़मरह" बोलते हैं। इस मस्जिद का तारीख़ी पसे मन्ज़र येह है कि 9 हिजरी में जब ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज के लिये तशरीफ़ लाए मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا साथ थीं, बारी के दिनों के बाइ़स त़वाफ़ अदा न कर सकीं, ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो उन्हें मग़्मूम पाया। फ़रमाया : आ़इशा परेशान न हो येह आ़रिज़ा बनाते आदम (या'नी ख़्वातीन) पर लिखा गया है। ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के भाई ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا को फ़रमाया : आ़इशा को ले जाएं और मक़ामे तन्ईम से एह़राम बांध कर उ़मरह कर लें। (بخاری، 1/127، حدیث:317۔ بلد الامین، ص138)

अबू लहब और उस की बीवी की क़ब्रें

इब्ने जुबैर ने अपने सफ़र नामे में लिखा है : तन्ईम से कुछ दूर बाईं त़रफ़ अबू लहब और उस की बीवी उम्मे जमील की क़ब्रें हैं जिन पर पत्थरों के ढेर लगे हुए हैं अब तक लोग आते जाते इन मन्हूस क़ब्रों पर पथराव करते हैं। (وَالعِيَاذُبِاللّٰه) (बलदुल अमीन स.138, तारीख़े मक्का, स. 445) आज कल का मा'लूम नहीं कि इन की क़ब्रें नज़र आती हैं या ज़मीन में धंस गई हैं या किसी इ़मारत तले दब गई हैं। बहर ह़ाल येह कोई ज़ियारत गाह नहीं सिर्फ़ इ़ब्रत के लिये तज़्किरा कर दिया है।

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !

कि जिस को तू ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

मस्जिदे तन्ईम की ता'मीरात

तन्ईम के इस तारीख़ी मक़ाम पर सब से पहले मुह़म्मद बिन अ़ली शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने मस्जिद ता'मीर की, फिर अबुल अ़ब्बास अमीरे मक्का ने कुब्बा (या'नी गुम्बद) बनवाया, बा'द अज़ां एक बूढ़ी ख़ातून ने ख़ूबसूरत मस्जिद बनवाई। (बलदुल अमीन, स. 138,139)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मस्जिदे निमरा

येह आ़लीशान मस्जिद मैदाने अ़रफ़ात के मग़रिबी (west) कनारे पर अपने जल्वे लुटा रही है, इस के मज़ीद दो नाम येह हैं :

﴾1﴿ मस्जिदे अ़रफ़ा ﴾2﴿ मस्जिदे इब्राहीम।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मस्जिदे ज़ी तुवा

मस्जिदुल ह़राम से जानिबे तन्ईम जाते हुए रास्ते में येह मस्जिद वाके़अ़ थी। शहन्शाहे दो आ़लम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़मरह या ह़ज के मुबारक सफ़र में इसी मस्जिदे मुक़द्दस को नवाज़ा, यहां रात क़ियाम भी फ़रमाया। हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ या'नी पैरवी में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने भी अपने अस्फ़ारे मुक़द्दसा (या'नी मुबारक सफ़रों) में ऐसा ही किया। (बलदुल अमीन, स. 143, بخاری، 1/236)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मस्जिदे कब्श

मस्जिदे कब्श कोहे सबीर के पहलू में है। इसी मुक़द्दस मक़ाम पर ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से इर्शाद हुवा : ﴿قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۰۵﴾﴾ (پ 23، الصّٰفّٰت:105) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाई हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को। (बलदुल अमीन, स. 144) कहा जाता है इसी मक़ाम पर **ह़ज़रते** इस्माईल ज़बीहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ब्ह़ के लिये लिटाया गया था, यहीं जन्नत से नाज़िल शुदा मेंढा ज़ब्ह़ हुवा था, येह क़बूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम है, अब मस्जिद की ज़ियारत नहीं हो सकती। येह मक़ाम मक्कए मुकर्रमा से आते वक़्त "बड़े शैत़ान" की सीधी जानिब 70 या 80 क़दम के फ़ासिले पर है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ारे मुर्सलात

ग़ारे मुर्सलात मिना शरीफ़ की मस्जिदे ख़ैफ़ से शुमाल (NORTH) की त़रफ़ पहाड़ पर वाके़अ़ है, येह पहाड़ अ़रफ़ात शरीफ़ से मिना आते हुए सीधे

हाथ की त़रफ़ पड़ेगा। सरवरे काइनात صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इस मुबारक ग़ार में "सूरतुल मुर्सलात" नाज़िल हुई। कहा जाता है सरकारे नामदार صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मुबारक ग़ार में तशरीफ़ फ़रमा हुए तो ऊपर के पथ्थर से सरे अन्वर मस (TOUCH) हुवा, पथ्थर नर्म हो गया और उस में सरे पाक का निशान बन गया। आ़शिक़ाने रसूल हुसूले बरकत के लिये इस निशाने मुबारक से अपना सर लगाते हैं। (بلد الامين، ص215، كتاب الحج، ص297 بتغير)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

विलादत गाहे सरवरे आ़लम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ुत़्बुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत गाह पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلد الامين، ص201) यहां पहुंचने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप कोहे मरवह के किसी भी क़रीबी दरवाज़े से बाहर आ जाइये। सामने नमाज़ियों के लिये बहुत बड़ा इह़ात़ा बना हुवा है, इह़ात़े के उस पार येह मकाने आ़लीशान अपने जल्वे लुटा रहा है, اِنْ شَآءَ الله दूर ही से नज़र आ जाएगा। ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी। आज कल इस मकाने अ़ज़मत निशान की जगह लाइब्रेरी क़ाइम है और उस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : "مَكْتَبَةُ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَة"।

जबले अबू क़ुबैस

येह दुन्या का सब से पहला पहाड़ है, मस्जिदुल ह़राम के बाहर सफ़ा व मरवह के क़रीब वाक़ेअ़ है। इस पहाड़ पर दुआ़ क़बूल होती है, अहले मक्का क़ह़त़ साली के मौक़अ़ पर इस पर आ कर दुआ़ मांगते थे। ह़दीसे पाक में है कि ह़जरे अस्वद जन्नत से यहीं नाज़िल हुवा था। (الترغيب والترهيب، 2/125، حديث:20)

इस पहाड़ को "अल अमीन" भी कहा गया है कि "तूफ़ाने नूह़" में ह़जरे अस्वद इस पहाड़ पर ब ह़िफ़ाज़त तमाम तशरीफ़ फ़रमा रहा, एक रिवायत के मुत़ाबिक़ का'बए मुशर्रफ़ा की ता'मीर के मौक़अ़ पर इस पहाड़ ने ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को पुकार कर अ़र्ज़ की : "ह़जरे अस्वद इधर है।" (بلد الامين، ص204بتغير قليل)

मन्कूल है : हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी पहाड़ पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर चांद के दो टुकड़े फ़रमाए थे। चूंकि मक्कए मुकर्रमा पहाड़ों के दरमियान घिरा हुवा है चुनान्चे इस पर से चांद देखा जाता था पहली (दूसरी और तीसरी) रात के चांद को हिलाल कहते हैं लिहाज़ा इस जगह पर बत़ौरे यादगार मस्जिदे हिलाल ता'मीर की गई। बा'ज़ लोग इसे मस्जिदे बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه कहते हैं। وَاللهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم ـ

पहाड़ पर अब शाही मह़ल ता'मीर कर दिया गया है, और अब उस मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत नहीं हो सकती। 1409 हि. के मौसिमे ह़ज में इस मह़ल के क़रीब बम के धमाके हुए थे और कई हुज्जाजे किराम ने जामे शहादत नोश किया था, इस लिये अब मह़ल के गिर्द सख़्त पहरा रहता है। मह़ल की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र इसी पहाड़ की सुरंगों में बनाए हुए वुज़ू ख़ाने भी ख़त्म कर दिये गए हैं। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام इसी जबले अबू क़ुबैस पर वाक़ेअ़ "ग़ारुल कन्ज़" में मदफ़ून हैं जब कि एक मुस्तनद रिवायत के मुत़ाबिक़ मस्जिदे ख़ैफ़ में दफ़्न हैं जो कि मिना शरीफ़ में है। وَاللهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم ـ

जबले नूरो जबले सौर और उन के ग़ारों को सलाम   नूर बरसाते पहाड़ों की क़ित़ारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 608)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡھَا का मकान

मक्के मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मक्कए मुकर्रमा में रहे इसी मकाने आ़लीशान में सुकूनत पज़ीर रहे। शहज़ादए अ़ज़ीम इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के इ़लावा तमाम औलाद ब शुमूल शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡھَا की यहीं विलादत हुई। ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام ने बारहा इस मकाने आ़लीशान के अन्दर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी दी, ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से नुज़ूले वह़ी इसी में हुवा। मस्जिदे ह़राम के बा'द मक्कए मुकर्रमा में इस से बढ़ कर अफ़्ज़ल कोई मक़ाम नहीं। मरवह की पहाड़ी के क़रीब वाक़ेअ़ बाबुल मरवह से निकल कर बाईं त़रफ़ (LEFT SIDE) ह़सरत भरी निगाहों से सिर्फ़ इस मकाने अ़र्श निशान की फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर लीजिये।

ऐ ख़दीजा ! आप के घर की फ़ज़ाओं को सलाम

ठन्डी ठन्डी दिलकुशा महकी हवाओं को सलाम

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ग़ारे जबले सौर

येह ग़ारे मुबारक मक्कए मुकर्रमा की दाईं जानिब "मह़ल्लए मस्फ़ला" की त़रफ़ कमो बेश चार किलो मीटर पर वाक़ेअ़ "जबले सौर" में है। येह वोह मुक़द्दस ग़ार है जिस का ज़िक्र कुरआने करीम में है, मक्के मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने यारे ग़ार व यारे मज़ार आ़शिक़े अकबर ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के साथ ब वक़्ते हिजरत यहां तीन रात क़ियाम पज़ीर रहे। जब दुश्मन तलाशते हुए **ग़ारे सौर** के मुंह पर आ पहुंचे तो ह़ज़रते सिद्दीक़े

अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ग़मज़्दा हो गए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** दुश्मन इतने क़रीब आ चुके हैं कि अगर वोह अपने क़दमों की त़रफ़ नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे । सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तसल्ली देते हुए फ़रमाया : ﴿لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰہَ مَعَنَا﴾ (پ10، التوبہ:40) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है ।" इसी जबले सौर पर क़ाबील ने हाबील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को शहीद किया ।

ख़ूब चूमे हैं क़दम सौरो हिरा ने शाह के   महके महके प्यारे प्यारे दोनों ग़ारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश, स. 582)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ारे हिरा

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ुहूरे रिसालत से पहले यहां ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे हैं। येह क़िब्ला रुख़ वाक़ेअ़ है। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पहली वह़ी इसी ग़ार में उतरी जो कि ﴿اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ﴾ से ﴿مَا لَمْ یَعْلَمْ﴾ तक पांच आयतें हैं। येह ग़ार मुबारक मस्जिदुल ह़राम से जानिबे मशरिक़ तक़रीबन तीन मील पर वाक़ेअ़ "जबले हिरा" पर है, इस मुबारक पहाड़ को जबले नूर भी कहते हैं। "ग़ारे हिरा" ग़ारे सौर से अफ़्ज़ल है क्यूं कि ग़ारे सौर ने तीन दिन तक सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूमे जब कि "ग़ारे हिरा" सुल्ताने दो सरा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा ।

क़िस्मते सौरो हिरा की ह़िर्स है   चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 85)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दारे अरक़म

दारे अरक़म कोहे सफ़ा के क़रीब वाक़ेअ़ था। जब कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से ख़त़रात बढ़े तो सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी में पोशीदा त़ौर पर तशरीफ़ फ़रमा रहे। इसी मकाने आ़लीशान में कई साहि़बान मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنۡه और मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنۡه इसी मकाने बरकत निशान में दाख़िले इस्लाम हुए। इसी में पारह 10 **सूरतुल अन्फ़ाल** आयत नम्बर 64 ﴿يَاۤ اَيُّهَا النَّبِىُّ حَسۡبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ﴾ नाज़िल हुई। ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه की वालिदए माजिदा رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡهَا ने इस जगह पर मस्जिद बनवाई। बा'द के कई ख़ुलफ़ा अपने अपने दौर में इस की तज़्ईन (या'नी ज़ीनत देने) में हि़स्सा लेते रहे। अब येह तौसीअ़ में शामिल कर लिया गया है और इस की कोई अ़लामत नहीं मिलती।

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيۡب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मह़ल्लए मस्फ़ला

येह मह़ल्ला बड़ा तारीख़ी है, ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيۡهِ السَّلَام यहीं रहा करते थे, ह़ज़राते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ व ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنۡهُم भी इसी मह़ल्लए मुबारका में क़ियाम पज़ीर थे। येह मह़ल्ला ख़ानए का'बा के हि़स्सए दीवार ''मुस्तजार'' की जानिब वाक़ेअ़ है।

रह़मतें हों उस मह़ल्ले पर ऐ रब्बे दो जहां !

था मकां इस में नबी का थे सह़ाबा के मकां

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيۡب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जन्नतुल मा'ला

जन्नतुल बक़ीअ़ के बा'द जन्नतुल मा'ला दुन्या का सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान है। यहां मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ख़दीजतुल कुब्रा, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कई सह़ाबा व ताबेईन عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और औलिया व सालिह़ीन के मज़ाराते मुक़द्दसा हैं। अब इन के कुब्बे (या'नी गुम्बद) मज़ारात मिस्मार कर के उन पर रास्ते निकाले गए हैं। लिहाज़ा बाहर रह कर दूर ही से इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكُمۡ يَااَهۡلَ الدِّيَارِ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُسۡلِمِيۡنَ وَاِنَّآاِنۡ شَآءَاللّٰهُ بِكُمۡ لَاحِقُوۡنَ ط نَسۡئَلُ اللّٰهَ لَنَاوَلَكُمُ الۡعَافِيَةَ

सलाम हो आप पर ऐ क़ब्रों में रहने वाले मोमिनो और मुसल्मानो ! और हम भी اِنۡ شَآءَاللّٰه आप से मिलने वाले हैं, हम **अल्लाह** पाक से आप की और अपनी आ़फ़िय्यत के त़ालिब हैं।

अपनी, अपने वालिदैन और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ मांगिये और बिल ख़ुसूस अहले जन्नतुल मा'ला के लिये ईसाले सवाब भी कीजिये। इस क़ब्रिस्तान में दुआ़ क़बूल होती है।

जन्नतुल मा'ला के मदफ़ूनीन पर लाखों सलाम
बे अ़दद हों रह़मतें अल्लाह की उन पर मुदाम

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيۡب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मज़ारे (ह़ज़रते) मैमूना

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते) मैमूना رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهَا से ब ह़ालते एह़राम निकाह़ फ़रमाया। मदीना रोड पर "नवारिया" के क़रीब मक़ामे सरिफ़ पर वाक़ेअ़ है। येह मज़ार शरीफ़ अगर्चे मक्कए मुकर्रमा से बाहर है

ताहम यहां हुज्जाज कोशिश करें तो हाज़िरी दे सकते हैं, हुसूले सआदत और ब उम्मीदे नुज़ूले रहमत मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के मज़ार शरीफ़ का ज़िक्रे ख़ैर किया जाता है। बस मदीना रोड पर तन्ईम या'नी मस्जिदे आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से गुज़रती हुई आगे बढ़ती है, मस्जिदुल हराम से तक़रीबन 17 किलो मीटर पर "नवारिया" है, यहां उतर जाइये और पलट कर रोड के उसी कनारे पर मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ चलना शुरूअ़ कीजिये, दस या पन्दरह मिनट चलने के बा'द एक पोलीस चेक पोस्ट (नुक्तए तफ़्तीश) है फिर मौक़िफ़े हुज्जाज बना हुवा है इस से थोड़ा आगे रोड की उसी जानिब एक चार दीवारी नज़र आएगी, यहीं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। येह मज़ार मुबारक सड़क के बीच में है। लोगों का कहना है कि सड़क की ता'मीर के लिये इस मज़ार शरीफ़ को शहीद करने की कोशिश की गई तो ट्रैक्टर (TRACTOR) उलट जाता था, नाचार यहां चार दीवारी बना दी गई। हमारी प्यारी प्यारी अम्मी जान मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की करामत मरहबा ! ! !

अहले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़   बानुवाने तहारत पे लाखों सलाम

बा'दे वफ़ात सय्यिदतुना मैमूना ने अंगूर खिलाए

तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की बा'दे वफ़ात रूनुमा होने वाली करामत पढ़िये और ईमान ताज़ा कीजिये। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के मज़ारे पुर अन्वार का ज़ाहिरी दरवाज़ा जिन दिनों ज़ाइरीन के लिये खुला रहता था उन दिनों का वाक़िआ एक ज़ाइर की ज़बानी सुनिये : आधी रात के वक़्त हम मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा जाने वाले रास्ते पर वाक़ेअ़ मक़ामे सरिफ़ पहुंचे जहां तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान

ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का मज़ार है, अ़जीब इत्तिफ़ाक़ है कि उस दिन मैं ने कुछ नहीं खाया था, भूक की शिद्दत की वज्ह से मेरी त़ाक़त जवाब दे चुकी थी, रोटी ह़ासिल करने की बहुत कोशिश की मगर कहीं से न मिली, मजबूरन ज़ियारत के लिये हुजरए मुक़द्दसा में गया, मैं ने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार के सामने सलाम अ़र्ज़ किया, सूरतुल फ़ातिह़ा और सूरतुल इख़्लास पढ़ कर उन की रूहे़ पुर फ़ुतूह़ को ईसाले सवाब किया, फ़क़ीराना सदा लगाई : "ऐ प्यारी अम्मीजान ! मैं आप का मेहमान हूं, खाने के लिये कुछ इनायत फ़रमाइये और अपने अल्त़ाफ़े करीमाना से मुझे मह़रूम न लौटाइये।" मैं बैठा हुवा था कि रज़्ज़ाक़े मुत़्लक़ की त़रफ़ से यकायक ताज़ा अंगूर के दो गुच्छे मेरे हाथ में आ गए ! अ़जीब तरीन बात येह थी कि सर्दियों का मोसिम था और कहीं भी ताज़ा अंगूर मुयस्सर न थे, मैं ह़ैरान रह गया, एक गुच्छा तो मैं ने वहीं खा लिया, मज़ार शरीफ़ से बाहर आ कर एक एक दाना साथियों में तक़्सीम कर दिया। (मख़्ज़ने अह़मदी, स. 99)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले ह़फ़्ते का रिसाला

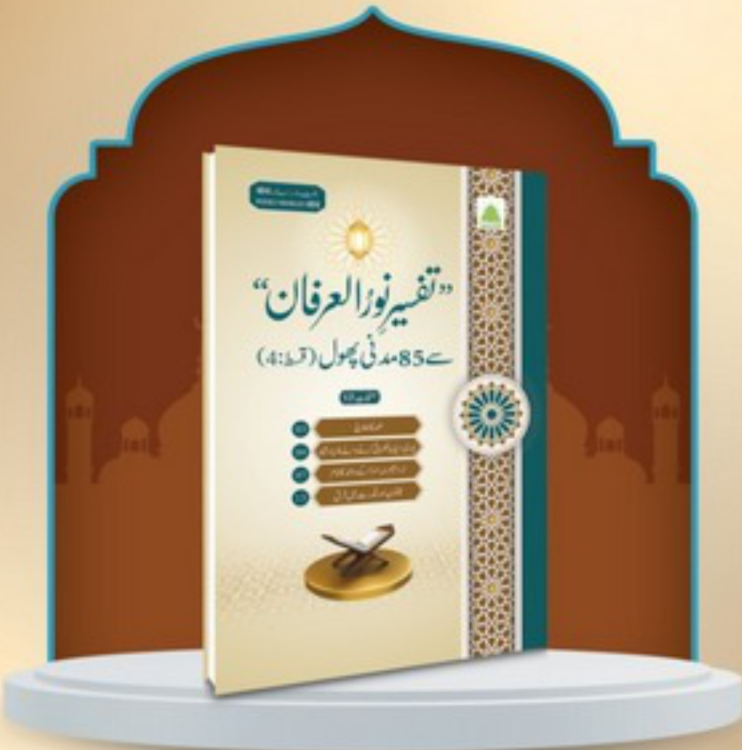

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel — Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025